VOL- IX | ISSUE- V | MAY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

स्त्री, समाज और बौध्द तत्वज्ञान : एक सामाजिक अध्ययन

डॉ. प्रकाश सुर्यभान सोनक
विभाग प्रमुख, समाजशास्त्र,
यशोदा गर्ल्स आर्टस् ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज,
स्नेहनगर, नागपूर.

प्रस्तावना

भगवान बुध्द के सामाजिक विचारों में स्त्री जाती समाज के उत्थान के लिए जो कार्य उनके धम्म में किये गये है, उनका महत्व अधिक है। भगवान बुध्द एकमेव महापुरूष है जिन्होंने अपने दर्शन में स्त्रियों को समान अधिकार दिया और जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना करके न्याय, स्वतंत्रता, समता एवं भ्रातृत्व इन्ही मानवतावादी मूल्यों को अपने तत्वज्ञान का आधार बनाया। वैश्विकरण की प्रक्रिया अगर बुध्द के इन विचारों को अपनाती है तो सम्पूर्ण विश्व का विकास निश्तिच है।

पालि साहित्य भगवान बुध्द के धम्मोपदेश से भरा बौध्द साहित्य है। पालि साहित्य में स्त्री सशक्तिकरण की चर्चा करने से पहले पालि साहित्य के अस्तित्व आने के पूर्व–बुध्दपूर्व युग में भारतीय समाज में नारी की अवस्था पर विचारविमर्श करना होगा। ऋग्वेदकालीन गार्गी–मैत्रेयी के कुछ गिनेचुने संदर्भ को छोडकर बुध्दकाल तक नारी का जीवन दुखभरी प्रताड़नाओं को अंधेरे में लिप्त था। पुरूष के समान 'वह भी मानव जाती का हिस्सा है' यह बात ही पुरूषप्रधान संस्कृति ने भूला दी थी। घर में और बाहर शारीरिक मेहनतवाले काम करना, बच्चों को जन्म देते रहना और गुलाम की तरह पति और घरवालों की मरते दम तक सेवा करना ही उसके जीवन का सार था। धार्मिक कार्यो मे उसका सहभाग निषिध्द था। वह संन्यासिनी होकर अपनी आत्मिक उन्नती नहीं कर सकती थी। क्योंकि स्त्रियों को पुरूषों के समान नहीं समझा जाता था। स्त्रीने लडके को जन्म देना बहुत ही महत्वपूर्ण बात थी। क्योंकि लडका ही पिता के मरणोपरांत अग्निसंस्कार कर सकता था। भगवान बुध्द के जीवनकाल में भी लडकी का जन्म परिवार के लिए दुख की बात माना जाता था।

भगवान बुध्द ने अपने उपदेशों से उत्तर भारत के तत्कालीन समाज में नारी उत्थान के संदर्भ में एक नयी चेतना लायी थी। बुध्द ने स्त्रियों को प्रव्रज्जा देकर भिक्षुणी संघ की स्थापना की और नारी भी अपने सदाचरण से, शीलसंपन्नता से धर्म में सर्वोच्च अर्हतपद भी प्राप्त कर सकती है यह तत्कालीन समाज को दिखा दिया। उस समय के समाज पर इतना गहरा असर हुआ कि समाज के सभी वर्गो से स्त्रियाँ प्रवज्जित होकर भिक्षुणी संघ में दाखील हो गयी। धार्मिक स्वतंत्रता मिलने पर नारी भी पुरूषों जैसा उच्च आत्मिक विकास कर सकती है यह उन्होंने दुनिया को दिखा दिया। पालि साहित्य के प्राचीन ग्रंथ 'थेरीगाथा' में बुध्दकालीन ७३ भिक्षुणियों के विचार संग्रहित है। यह पुरा ग्रंथ ५२२ पद्यमय पालि गाथाओं में है, जिसमें उन भिक्षुणियों ने अपने पूर्व जीवन के बारे में और प्रवज्जा ग्रहण करने के बाद मिले हुई मानसिक संतोष के बारे में, अर्हतपद के सुख के बारे में खुलकर लिखा है। भिक्षुणी बनी हुई स्त्रियां समाज के विभिन्न वर्गो से आई है। जैसे महाप्रजापती गोतमी, सुमना, खेमा, सुमेधा, शैला राजवंश की महिला थी। भद्रा, उपशमा, अभिरूपनंदा, सुंदरीनंदा, तिष्या, सिंहा, धिरा यह क्षत्रिय वंश की महिलाये थी। रोहिणी, सुंदरी, मुक्ता, नंदा, सोमा, उत्तमा, चाला, उपचाला, शिशुपचाला, मैत्रिका यह

ब्राम्हणवंश की महिलाये थी। धम्मदिना, भद्राकुंडलकेशा, सुजाता, पटाचारा, चित्रा, पूर्णा यह धनी वर्ग की महिलाये थी। आम्रपालि, अड्कासी, अभयमाता, विमला ये गणिकाएँ थी और कुछ निम्नवर्गीय दासी पुत्रियां भी थी। बुध्द ने जैसा कहा था कि, सागर में आने के बाद नदीयों का पानी एक जैसा हो जाता है वैसे ही भिक्षुणी संघ में आने के बाद यह भी स्त्रियां अपना उच्च–नीच सामाजिक स्तर पीछे छोड आयी।

पूरी जायदाद लडकों में बांटने के बाद वृध्द सोणाका अनादर के कारण उसने वृध्दावस्था में प्रवज्जा ली। फांसी जानेवाले दंडित चोर को छुडवाकर उससे शादी करनेवाली, राजगृह के धनवान सेठ की एकलौती पुत्री भद्रा कुंडलकेशा को विवाह के बाद उसके पती ने पर्वत से ढकेलकर मारना चाहा तो बडी चतुराई से उसने ही पती को ढकेल दिया और परिवारिक जीवन से मन ऊब जाने से उसने प्रवज्जा ली। भद्रा कुंडलकेशा के समान ही पटाचारा भिक्षुणी का पूर्वजीवन भी अत्यंत करूणाजनक और दु:खमय है। उज्जयिनी के वैश्यकुल के इसिदासी के पिता ने उसकी दो बार शादी की, लेकीन उसके दोनों पतियों को वह पसंद न आने के कारण उन्होने उसे घर से निकाल दिया था। इस इसिदासी ने बुध्द की शरण ली और अर्हत्व प्राप्त किया। वैशाली की क्षत्रिय कुल की स्थविरिका, कोसल जनपद की ब्राम्हण कुल की गुत्ता, राजगृह के वैश्य कुल की धम्मदिना, साकेत नगर के वैश्य कुल की सुजाता इन सबने अपने पतियों से अनुमति लेकर प्रवज्जा ली। श्रावस्ती के ब्राम्हण कुल की गुत्ता ने और श्रावस्ती के श्रेष्ठी कुल की उत्पलवर्णा ने अपने मातापिता से अनुमती लेकर प्रवज्जा ली। मंतावली नगरी के क्राँच नामक राजा की पुत्री सुमेधा ने मातापिता के विरोध के बावजूद प्रवज्जा ली। श्रावस्ती के दस पुत्रोंवली सोणा ने और श्रावस्ती के कोसलराज प्रसेनजित की बहन सुमना ने बुढापे में प्रवज्जा ली। भिक्षुणी होने के बाद मिली हुई शांती का अनुभव करते हुए सुमना थेरी कहती है, ‘‘हे वृध्दा थेरा! तू सुख की निंद सो जा। अपने हाथों से बनाये वस्त्रों को ओढकर तू इसी जीवन में परम शांती प्राप्त कर, क्योंकि तेरा राग शांत हो चुक है। निर्वाण का साक्षात्कार कर तू परम शांत हो गई है।’’

दसशील, आर्य अष्टांगिक मार्ग, चार आर्यसत्य, पांच संयोजन, तीन विद्याएँ, छह अभिज्ञाएँ निर्माण आदि बौध्द तत्वों की यह भिक्षुणिया थेरीगाथा में निरंतर चर्चा करते दिखायी देती है। पितृसत्ताक समाज में दबी हुई शोषिक पीडित इन महिलाओं को बुध्द ने पुरूषों के बराबर धर्म में स्थिर समझकर उनको ज्ञान के मार्ग पर लाकर धर्म में सर्वोच्च निर्वाण के शिखर पर खडा कर दिया। दुर्बल नारियों में बुध्द ने अनन्य आत्मविश्वास पेदा करके भिक्षुणी संघ के रूप में भारतीय समाज को दिखा दिया कि नारी अबला नही होती, वह सबला ही होती है। सच्चे दिल से प्रयत्न किया तो धार्मिक प्रगती के आड स्त्रीतव नही आता यह स्पष्ट करते हुए सोमा थेरी कहती है कि, ‘‘जब चित्त अच्छी प्रकार समाधि में स्थित है, ज्ञान नित्य विद्यमान है। और प्रज्ञा के द्वारा धर्म का सम्यक दर्शन कर लिया है, तो स्त्रीत्व इसमें हमारा क्या करेगा? इसीलिए थेरीगाथा को ‘नारी स्वतंत्रता को प्रकट करनेवाला प्रथम ग्रंथ’ कहते हुए शांती स्वरूप बौध्द कहते है कि, ‘‘थेरीगाथा काल के पहले भारतीय इतिहास में नारी को अपनी व्यथा को इतनी स्वतंत्रता के साथ प्रकट करते नही देखा जा सकता। डॉ. विमलकीर्ति कहते है कि, नारी जीवन का बुध्द ने जितना सम्मान किया और नारी जीवन की जितनी प्रतिष्ठा बुध्द ने बढाई उतनी शायद ही दुनिया के किसी धर्म संस्थापक ने बढाई होगी। जो नारी पुरूषप्रधान समाज में किसी प्रकार के अधिकार की अधिकारिणी नही थी उसी को सभी प्रकार के अधिकारों की अधिकारिणी बनाना उसको ज्ञान प्राप्त करने की, ज्ञान का उपदेश देने की और निर्वाण, परमशांती को प्राप्त करने की अधिकारिणी घोषित करना बहुत क्रांतिकारी बात थी।

भिक्षुणी संघ की स्थापना करके भगवान बुध्द ने स्त्रियों को सिर्फ धर्म में ही पुरूषों के समान उच्च स्थान नही दिया अपितु परिवार में और समाज में भी उसके लिए सम्मानजनक स्थिति पैदा की। यह उसी

का परिणाम था कि, वैश्य, क्षत्रिय और ब्राम्हणों की स्त्रिया भी अपने माता–पिता और पतियों से अनुमती प्राप्त कर भिक्षुणियां बनी, उपासिकाएँ बनी। उन्होंने बुध्द और भिक्षुसंघ के भोजन का प्रबंध किया, उनके चीवर का प्रबंध किया, उनके लिए विहार बनवाये और संरक्षित वन, वगीचे भिक्षुसंघ को दान में दिए। उपचाला और शिशुपचाला यह तीन बहने थी भिक्षुणियाँ बनी। काश्यप के साथ उनकी पत्नी भद्रा कापिलायनी ने प्रव्रज्जा ग्रहण की।

बुध्द ने अपने उपदेशों से नारीयों के संदर्भ में समाज की सोचने की दृष्टी ही बदल दी। पुरूषप्रधान समाज मे सदियो से महिलाओं के धार्मिक स्थलोंपर और धार्मिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने पर जो प्रतिबंध था, उसे हटकर बुध्द ने भिक्षुणी संघ की स्थापना करके महिलाओं को अत्युच्च अर्हतपद दिला दिया। बुध्द की यह मानस कन्याएँ भिक्षुओं के समान भारी भीड के सामने भी धर्म पर प्रवचन करती थी। शुक्रा नामक अर्हत भिक्षुणी लोगों की बडी–बडी परिषदों में धम्मप्रवचन करती थी और उसका उपदेश अमृत जैसा था, ऐसा संयुक्त निकाय ग्रंथ में कहा गया है। खेमा भिक्षुणी ने एक बार कोसलराज प्रसेनजित को धम्मोपदेश दिया था ऐसा संयुक्त निकाय में ही वर्णन है। राजगृह के बास के जंगल में (वेणुवन में) विहार करते समय बहुत सारे लोगों के निवेदन करने पर कजंगला भिक्षुणीने उसको धम्मोपदेश दिया था और बाद में उन लोगों के मुंह से उसके बार में सुनने के बाद स्वयं बुध्द ने उसका अनुमोदन करते हुए कहा कि, ‘‘गृहस्थों, कजंगलिका भिक्षुणी पंडिता है। वह महाप्रज्ञावान है। इस बारे में आप मुझे भी पूछ लेते तो तो मैं वही बताता जो कजंगलिका ने कहा है।

एक बार जब बुध्द अपने भिक्षुसंघ के साथ वैशाली में आम्रपालि गणिका के आंबवन में ठहरे हुए थे। तब आम्रपालि रथ में सवार होकर तथागत के दर्शन हेतू गयी और उसने बुध्द और उनके भिक्षु संघ को अगले दिन के भोजन का निमंत्रण दिया जिसे बुध्द ने मौन से ही स्वीकृत किया। बुध्द जैसे महान व्यक्ति ने एक गणिका के घर भोजन के लिए जाना उस समय साधारण बात नही थी। अपने घर वापस जाती हुई आम्रपालि बहुत ही हर्षोल्हासित थी बहुत ही गर्व महसूस कर रही थी और इसी अभिमान की भावना में रत आम्रपालि ने उस समय बुध्द को मिलने और अगले दिन के भोजन का निमंत्रण देने जा रहे वैशाली के लिच्छवी कुमारों के रथ के पहियों से अपने रथ के पहिये भिडा दिये। दीघनिकाय और विनयपिटक आदि ग्रंथों में इस घटना का बहुत ही रोचक वर्णन है। वैशाली के राजकुमारों द्वारा हजारों सुवर्ण मुद्रा देने पर भी वह बुध्द का भोजन उनको देने को राजी नही हुइ। दूसरे दिन भोजन के साथ उसने वह आंबवन भी भिक्षुसंघ को दान दिया और गणिकाओं को बुध्द ने प्रवज्जा देकर भिक्षुणी संघ में उन्हे प्रवेश दिया, जिसके बाद उन गणिकाओं ने अर्हतपद प्राप्त किया।

यह महत्वपूर्ण बात है कि, श्रीलंका में बौध्द धम्म के प्रचार के लिए सम्राट अशोक ने अपने भिक्षु बने पुत्र महेंद्र के साथ भिक्षुणी बनी पुत्री संघमित्रा को भेजा था। भिक्षुणी बनी संघमित्रा ही बोधिवृक्ष की शाखा भारत से श्रीलंका लेकर गयी थी। उसके साथ धम्मप्रचार के लिए जो भिक्षुणियाँ गयी उनमें उतरा, हेमा, मसारगल्ली, अग्निमित्रा, दासिका, फेग्गु, पर्वती, मत्ता, मल्ला, धर्मदासी भिक्षुणियाँ प्रमुख थी। उन्होंने वहां त्रिपिटक का गहरा अध्ययन किया था।

बुध्द ने अपने उपासकों के दिल में औरतों के बारे में आदरभाव उत्पन्न किया,उनके विचार और भावनाओं में बुध्द ने यह विचार दृढ कर दिया कि, महिला पुरूष से कभी नीच नही होती, वह पुरूष के बराबर ही होती है। बुध्द कहते है कि, पुरूष का जन्म माँ से ही होता है और इस दुनिया में माता से बढकर कोई और नही है। माता के दूध का कर्ज कोई भी पुरूष चुका नहीं सकता। इसीलिए पालि साहित्य में स्त्रियों के आदर में ‘मातुगाम’ संज्ञा आयी है। अंगतुक निकाय ग्रंथ में स्त्रियों के बारे में ही ‘मातुगाम सुत्त’ है जिसमें बुध्द ने अच्छी और बुरी स्त्रियों के दस गुण बताये है। संयुक्त निकाय ग्रंथ में ‘मातुगाम संयुक्त’ में बुध्द स्त्रियों का जीवन पुरूषो की अपेक्षा अधिक दुखदायक बताया है।

एक बार कोशलराज प्रसेनजित बुध्द से मिलने गया और उनकी चर्चा के मध्य उसके एक सेवक ने उसे बता दिया की, उसकी रानी मल्लीका देवी ने कन्या को जन्म दिया है। यह संदेश सुनकर राजा प्रसेनजित बहुत उदास हो गया। बुध्द ने इस उदासी का कारण राजा प्रसेनजित को कहा कि, ''हे राजन कोई स्त्री पुरूष से भी श्रेष्ठ हो सकती है। वह बुध्दिमान और शीलवान हो सकती है और वही स्त्री शूर राजाओं और सम्राट को जन्म देनेवाली माता हो सकती है। संयुक्तनिकाय ग्रंथ में वर्णित बुध्द के यह विचार बिलकुल ही स्पष्ट करते है कि, बौध्दधम्म में स्त्री और पुरूष समान तो होते ही है लेकिन नारी में यह विशेषताएँ होती है कि वे कभी पुरूषों में भी श्रेष्ठ और पूजनीय होती है।

निष्कर्ष

दो हजार पाँचसौ साल पहले भारतीय समाज में स्त्री के अस्तित्व का जब कोई भी मूल्य नही था, जब वह शोषित पीडित थी, तब भगवान बुध्द ने स्त्री के सशक्तीकरण का जो मार्ग दिखलाया वह आज भी हमारे लिए अनुकरणीय है और पालि साहित्य उसका दिशादर्शक है। साहित्य में महिलाओं के सशक्तिकरण की चर्चा करते समय एक बात सदा ध्यान में रखना चाहिए कि, सभी भाषाओं के साहित्य में महिलाओं के बारे में जो लिखा है वह ज्यादातर स्त्री–पुरूष संबंधों की बाते दर्शानेवाला शृंगाररस से पूर्ण प्रेम आधारित है, जब कि पालि साहित्य बौध्द धम्म का साहित्य होने के नाते उसमें उच्च मानसिक अवस्थाओं का चित्रण देखने को मिलता है और यह सब बाते उसमें निषिध्द है। पिटकतर साहित्य में जहाँ कही भी (उदा. अश्वघोषाचार्य के 'बुध्दचरित्र' में) थोडा श्रृंगारभरा वर्णन है, वहाँ भी धम्मचर्चा करते हुए उपेक्षा की भावना बलवत्तर करना उनका प्रयोजन है। पालि साहित्य में स्त्री उपभोग्य वस्तु नही, वह सम्मान के पात्र है और पूजनीय है।

संदर्भ ग्रंथ

१) साळुंके, आ. ह. (२००७). सर्वोत्तम भूमिपुत्र गौतम बुध्द, लोकायत प्रकाशन सातारा : लोकायत प्रकाशन.
२) अंगुलीमाल शाक्य पुत्र थेरो. (१९९३), जम्बुध्दीपातील आदर्श स्त्रीरत्ने. मुंबई : शाक्यमुनि श्रावक संघ.
३) नरसू, पी. लक्ष्मी. दि इसैन्स ऑफ बुध्दिझम. धनसारी : सिध्दार्थ गौतम शिक्षण व संस्कृती समिति.
४) भन्ते फॅनचॅम सी. (१९९९). बुध्दधम्म परिचय. औरंगाबाद : प्रज्ञा प्रसार धम्मसंस्कार पब्लिकेशन.
५) आंबेडकर, बी. आर. तळवलकर, घनश्याम, (२००१). भगवान बुध्द आणि त्यांचा धम्म. नागपूर : सुगत बुक डेपो.
६) गोडबोले, वामनराव. (२०१३). बोधिसत्व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या धम्मदीक्षेचा अविस्मरणीय इतिहास.
७) कवी, माधवी. (२००८). महिला कल्याण आणि विकास. नागपूर : विद्या प्रकाशन.